निराशा के अन्धेरे में उम्मीदों की मशाल जलानी होगी

नमिता

जब किसी देश की समूची नौजवान पीढ़ी का भविष्य अन्धेरी गुफाओं में भटक रहा हो और उससे बाहर निकलने की कोई राह नजर नहीं आ रही हो तो उस पीढ़ी में व्याप्त हताशा -निराशा कभी-कभी आत्मघाती राहों पर ले जाती है। आज देश के अलग-अलग कोनों से आ रही नौजवानों की आत्महत्याओं की खबरें इसी स्थिति का आइना हैं।

पाठक भूले नहीं होंगे कि किस तरह भविष्य के अन्धेरों से जूझते-जूझते चन्दन भट्टाचार्य नामक एक नौजवान ने पिछले पन्द्रह अगस्त के दिन पटना में अपने शरीर पर मिट्टी का तेल छिड़ककर आत्मदाह कर लिया था। इक्कीस वर्षीय इस नौजवान ने यह आत्मघाती कार्रवाई गुपगुच ढंग से नहीं की थी। कई दिन पहले से उसने अपनी जान-पहचान के लोगों ही नहीं प्रशासनिक अधिकारियों को भी खबर कर दी थी कि उसकी मागें पूरी न होने की सूरत में वह आत्मदाह कर लेगा।

क्या थी उसकी मांगे? चन्दन के अध्यापक पिता को सात साल से वेतन नहीं मिला था। नतीजतन बेहतर इलाज के अभाव में उसकी मां उसकी आंखों के सामने चल बसीं। पैसे की तंगी के कारण उसे खुद बी.ए. की पढ़ाई छोड़ देनी पड़ी थी। सात सालों से अपने पिता की बेबसी को वह देखता रहा। वेतन देने के बिहार सरकार के आश्वासनों से वह उम्मीद- नाउम्मीद के बीच हिचकोले खाता रहा। अपनी ताकतभर उसने जीवन-समर में लगातार जूझने की कोशिश की। लेकिन- आखिरकार वह टूट गया। जिन्दगी के बेरहम थपेड़ों ने उसके ज़ेहन में जीने के अहसास और मौत का फर्क मिटा दिया। हताशा-निराशा की अतल गहराइयों में डूबकर उसने एक दिन आत्मघाती फैसला ले लिया। समूचे प्रशासनिक अमले को उसके फैसले के बारे में पता था लेकिन वे तो 'आजादी' का जश्न मनाने में मशगूल थे। 15 अगस्त के दिन, जब देश का लफ्फाज प्रधानमंत्री लाल किले की प्राचीर से देश को महाशक्ति बनाने की डींगे हांक रहा था तो ठीक उसी समय पटना में चन्दन का शरीर धू-धू जल रहा था। चन्दन जैसे दो और नौजवानों ने उसी दिन यह कदम उठाया था लेकिन उन्हें बचा लिया गया।

चन्दन के आत्मदाह के ठीक चार दिन बाद दिन के उजाले में गाजियाबाद जिले के हिण्डन नदी के पुल के खम्भे पर राजेश नाम के एक नौजवान ने फांसी लगा ली। राजेश बेरोजगारी से परेशान था और चन्दन की तरह ही इस बेरहम व्यवस्था के खिलाफ अपनी अकेली लड़ाई में हताशा के उस मुकाम पर पहुंच गया था जहां जीने की कोई वजह नहीं दिखायी पड़ती।

ये दो हाल की घटनाएं हैं। जबसे देश में नयी आर्थिक नीतियां लागू होनी शुरू हुई हैं तब से आत्महत्याओं का यह सिलसिला काफी तेज रफ्तार से आगे बढ़ा है। कभी छंटनीशुदा बेरोजगार मजदूरों की, कभी बाजारकेन्द्रित खेती में होने वाली तबाही से बर्बाद किसानों की, तो कभी दहेज जुटा पाने में अक्षम पिताओं की तो कभी किसी अन्य तरीके से जिन्दगी की मार खाये लोगों द्वारा आत्महत्याएं करने की घटनाएं रोज-रोज सामने आ रही हैं।

किसी समाज में जब आत्महन्ता प्रवृत्तियां जोर पकड़ ले तो यह उस समाज के गतिरोध -ठहराव और चतुर्दिक फैली हताशा-निराशा का ही आइना होती हैं। आज हमारा समाज इसी दुर्भाग्यपूर्ण मुकाम पर खड़ा है। आधी सदी से भी अधिक समय गुजर चुका हैं जब मुल्क में कथित आजादी आयी थी। देश की आम जनता के लिए ये गुजरे साल लगातार टूटती उम्मीदों के साल रहे हैं। लेकिन 1980 के दशक के पहले तक नाउम्मीदी लोगों द्वारा आत्मघाती राहों पर चल पड़ने की खबरें अपवाद ही होती थीं। इस समय तक किसी न किसी रूप में जनता की नाउम्मीदी सामाजिक संघर्षों के रूप में फूटती नजर आती थी। इस दौर में देशभर में छात्रों-युवाओं और दूसरे मेहनतकश तबकों के व्यापक एवं जुझारू जनान्दोलन भी हो रहे थे। इस कारण निजी धरातल पर महसूस होने वाली नाउम्मीदी की बर्फ सामाजिक-राजनीतिक संघर्षों की ऊष्मा से पिघलती रहती थी। लेकिन आज हालात बेहद कठिन और दुर्भायपूर्ण बने हुए हैं। देश के हुक्मरान जिन लुटेरी नीतियों पर चल रहे हैं उनसे आम आदमी की जिन्दगी की दुश्वारियां उन हदों तक पहुंच चुकी हैं। जहां जीने और मरने की दूरियां लगातार कम होती जा रही हैं दूसरी ओर चतुर्दिक विकल्पहीनता का घना कुहासा छाया हुआ है। इस स्थिति को बदलने के लिए बदलाव की ताकतों द्वारा विभिन्न मोर्चो पर जो प्रयास किये जा रहे हैं उनसे व्यापक समाज के स्तर पर कोई उम्मीद जगती फिलहाल नजर नहीं आ रही है। इन्हीं हालात में कोई चन्दन, कोई राजेश जीवन संघर्ष में अकेले-अकेले जूझते हुए टूट जा रहे हैं।

अगर इन हालात को बदलना है तो हताशा-निराशा और सामाजिक विकल्पहीनता के इस अन्धेरे में हमें नयी उम्मीदों की मशाल जलानी होगी। भगत सिंह के शब्दों में कहें तो जड़ता और गतिरोध की इस स्थिति में हमें क्रान्तिकारी स्पिरिट ताजा करनी होगी। समाज का सत्तर फीसदी शोषित-उत्पीड़ित हिस्सा हम नौजवानों के शौर्य पर उम्मीदें लगाये हुए हैं। क्या ऐसे में देश के हर बहादुर, संजीदा और इंसाफ-पसन्द नौजवान का यह फर्ज नहीं बनता कि वह भगत सिंह की राह पर चलते हुए समाज को आगे बढ़ाने और इस अन्धेरे को मिटाने का रास्ता दिखाये।

जब तक एक क्रान्तिकारी मुहिम इस पूरे सामाजिक-आर्थिक ढांचे को बदलने के लिए तेज नहीं होती तब तक इस देश के बेरोजगार गरीब नौजवानों की बेचैनी और घुटन व्यवस्था परिवर्तन की कोशिशों के बजाय आत्महत्या की कोशिशों में तब्दील होती रहेगी। आज भारत इतिहास के अगले चरण में जाने के लिए नौजवानों से उनके हिस्से का खून मांग रहा हैं अगर यह मांग अनसुनी रही तो हर दिन इस देश के हर कोने में कोई चन्दन-कोई राजेश जलता रहेगा। ●